उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०- पत्र

दिगंत भाग-2 - गद्य खण्ड

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो०
रा०उ०स० म० विज्ञ० बुल्लेना,
13/06/2021 प्रणि०

शीर्षक - बातचीत

लेखक - बालकृष्ण भट्ट

महत्वपूर्ण अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या

"यदि मनुष्य की इन्द्रियाँ अपनी- अपनी शक्तियों में ~~अविकल~~ अविकल रहतीं और वाक्शक्ति मनुष्यों में न होती तो हम नहीं जानते कि इस गूँगी सृष्टि का क्या हाल होता।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत-भाग-2 बातचीत शीर्षक निबंध से ली गयी है। इन पंक्तियों में चिंतन लेखक ने 'बातचीत' शीर्षक पाठ के प्रारंभिक दौर में ही वाक्-शक्ति और मनुष्य की अन्य इन्द्रियों के संदर्भ में अपने विचार को प्रकट किया है।

इस प्रकार प्रस्तुत पँक्ति के द्वारा मनुष्य की वाक्शक्ति और उसकी अन्य इन्द्रियों के साथ प्रकृति के बीच समन्वय, अभिव्यक्ति एवं सुख-दुख के अनुभव को प्रकट करने में जो सहयोग मिलता है, उसकी जो उपयोगिता और महत्व है, उसपर निबंधकार ने अपने प्रखर विचारों द्वारा प्रकाश डाला है।

उपरोक्त पँक्ति में हिन्दी गद्य के महान निबंधकार बालकृष्ण भट्ट ने अपने विचारों को शब्द-बद्ध करते हुए कहा है कि अगर मनुष्य में वाक्शक्ति यानि बोलने की शक्ति नहीं होती तथा मनुष्य की दूसरी इन्द्रियाँ अविकल रहतीं, तो जीवन का सही आनन्द नहीं मिल पाता। प्रकृति ने सृष्टि की जो संरचना की है, वह गूँगी स्थिति में है। यानि प्रकृति का रूप मूक है। मौन ~~रूप~~ रूप में ही प्रकृति अपनी स्थिति की व्याख्या करती है। इन पँक्तियों के द्वारा निबंधकार के कहने का भाव यह है कि मानव के लिए वाक्शक्ति जो प्रकृति द्वारा वरदान के रूप में मिला है, उसके महत्व की व्याख्या नहीं की जा सकती है। आज जो कुछ भी सुख-दुःख की अभिव्यक्ति हम कर पाते हैं, उसमें वाक्शक्ति की ही प्रमुखता है। इस प्रकार अन्य इन्द्रियाँ भी हमारे जीवन में सहायक है किन्तु वाक्शक्ति की महत्ता सर्वाधिक है।

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० — पत्र

पुस्तक — निबंध माला

शीर्षक — 'रामायण'

लेखक — डॉ० राम मनोहर लोहिया

डॉ० देव पूरण प्रसाद
एसो० प्रो०
रा० सं० महाविद्यालय
Date: 13/06/21

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :—

प्रश्न :— डॉ० लोहिया ने राम-रावण संघर्ष को लेकर उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय के सम्बन्ध में क्या कहा है ?

उत्तर :— डॉ० राम मनोहर लोहिया के कथनानुसार रामायण के राम-रावण संघर्ष को लेकर उत्तर-दक्षिण का कभी-कभी निरर्थक विवाद खड़ा किया जाता है। दोनों में एक-दूसरे के प्रति गलत सन्देश पहुँचाने की चेष्टा की जाती है। सच्चाई यह है कि राम, रावण दोनों ही उत्तर के ही रहने वाले थे। यदि रावण उत्तर का नहीं था तो उसके वंशज उत्तर के ऋषि महर्षियों पर अत्याचार कैसे करते थे। राक्षसों का नाश करने के लिए महर्षि विश्वामित्र ने दशरथ से राम और लक्ष्मण को माँग लिया था। लेखक का कहना है कि वरदान पाने के बाद रावण अपने पुराने घर को छोड़कर लंका चला गया था, जिसे वह अपना अभेद्य किला मानता था।

रंग रूप के आधार पर भी उत्तर-दक्षिण में भेद दिखाने की चेष्टा की जाती है। रावण के वंशजों को रामलीलाओं में काला-कलूटा दिखलाया जाता है। परन्तु यह हमें याद रखना चाहिए कि राम और ~~लक्ष्म~~ भरत भी साँवले ही थे। अतः उपर्युक्त तथ्यों पर कोई विवाद नहीं होना चाहिए।

प्रश्न :— डॉ० लोहिया के अनुसार मनुष्य का चरित्र कैसा होना चाहिए ?

उत्तर : मानव चरित्र के सम्बन्ध में लेखक का दृष्टिकोण बिल्कुल साफ है। उनका कहना है कि मनुष्य का चरित्र सतत् संघर्षशील, शांत, गम्भीर और सही मार्ग पर चलने वाला होना चाहिए। जिसका चरित्र दृढ़ न होगा वह पुरुषोत्तम नहीं हो सकता है। वह समझौतावादी हो जायेगा। मनुष्य को दृढ़ निश्चयी होना चाहिए। रामायण में राम को भी दो-तीन हिलते हुए दिखलाया गया है। ~~तथा~~

शेष आगे—

तथाकथित लोकतंत्र के नाम पर धोबी वाला किस्सा नर-नारी सम्बन्ध के क्षेत्र में 'राम' को दोषी ठहराता है।

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक - मुंशी प्रेमचन्द

प्रमुख अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या -

"वह अपना रूप और यौवन उन्हें न दिखाना चाहती थी, क्योंकि यह देखने वाली आँखें न थीं। वह उन्हें इन रसों का आस्वादन करने के योग्य ही न समझती थी। कली प्रभात-समीर के स्पर्श से खिलती है। दोनों में समान सारल्य है। निर्मला के लिए वह प्रभातसमीर कहाँ था।"

सन्दर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'निर्मला' उपन्यास से ली गई है। इसके लेखक हिन्दी के महान उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्दजी हैं। प्रस्तुत गद्यांश में प्रेमचन्द वृद्ध मुंशी तोताराम से विवाह होजाने के पश्चात् निर्मला की मनःस्थिति का वर्णन कर रहे हैं। मुंशी तोताराम निर्मला के साथ बहुत मधुर व्यवहार करते थे। वह भी उनसे मधुर व्यवहार करने लगी थी। वह उनसे शारीरिक सम्बन्ध की इच्छा न रखकर उनके प्रति पिता की श्रद्धा रखती थी क्योंकि वे उसके पिता के उम्र के थे। मुंशी तोताराम की सज-धज का नाटक उसे असहनीय हो उठता था।

निर्मला में युवतियों की उमंग थी। वह साज-श्रृंगार करती और चाहती थी कि उनके यौवन की प्रशंसा हो। परन्तु उसके समक्ष पति रूप में वृद्ध मुंशी तोताराम थे। आयु का यह अन्तर उसे यौवन का प्रदर्शन करने से रोक देता था। वह चाहती थी कि कोई समवय का युवक उसके सामने हो। जिस प्रकार कली प्रातः समीर के स्पर्श से ही खिलती है, उसी प्रकार निर्मला भी समवय युवक के सामने खिल

शेष अगले-